प्रबन्धकारिणी कमेटी
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

अध्यक्ष : **जस्टिस नगेन्द्रकुमार जैन**
पूर्व मुख्य न्यायाधीपति, मद्रास-कर्नाटक उच्च न्यायालय
पूर्व अध्यक्ष - मानवाधिकार/लोकायुक्त, हिमाचल प्रदेश
व पूर्व अध्यक्ष - राजस्थान मानवाधिकार आयोग

उपाध्यक्ष : **श्री राजकुमार काला**, सीनियर एडवोकेट
श्री नरेन्द्रकुमार पाटनी, आई.पी.एस. (सेवानिवृत्त)

मानद मंत्री : **श्री प्रकाशचन्द्र जैन**, आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त)

संयुक्त मंत्री : **श्री पूनमचन्द्र शाह**, एडवोकेट
डॉ. हुकमचन्द सेठी, वरिष्ठ सर्जन,
अधीक्षक, भगवान महावीर कैन्सर हॉस्पिटल

कोषाध्यक्ष : **श्री महेन्द्रकुमार पाटनी**, पूर्व उपनिदेशक उद्योग विभाग

सदस्य : **श्री सुभद्रकुमार पाटनी, श्री तेजकरण डंडिया, श्री भंवरलाल अजमेरा, श्री पदमचन्द तोतूका, श्री नरेशकुमार सेठी, श्री आर. के. जैन, श्री बलभद्रकुमार जैन, श्री नवीनकुमार बज, श्री नानगराम जैन, जस्टिस मिलापचन्द जैन, डॉ. कमलचन्द सोगाणी, श्री हेमन्तकुमार सोगानी, श्री अशोक जैन, श्री शान्तिकुमार जैन, जस्टिस नरेन्द्रमोहन कासलीवाल , श्री कमलकुमार बड़जात्या, जस्टिस नरेन्द्रकुमार जैन, श्री देवेन्द्रकुमार जैन, श्री अशोक पाटनी, श्री सुधांशु कासलीवाल, श्री सुभाषचन्द जैन।**

Website : www mahaveerji.org (Online Booking)
www.shrimahaveerji.com

प्राकृत-अपभ्रंश के उन्नायक
अपभ्रंश साहित्य अकादमी के समर्थक

आचार्य श्री विद्यानन्दजी मुनिराज
के ५०वें दीक्षा वर्ष
(ज्ञानवर्द्धनोत्सव-वर्ष)
के उपलक्ष्य में
अपभ्रंश भाषा की
लोकोपयोगी मणियाँ
श्री महावीरजी तीर्थयात्रियों को समर्पित

जैनविद्या संस्थान/अपभ्रंश साहित्य अकादमी
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी
राजस्थान
Website : www.pra.jainapa.com
www apa.jainapa.com

श्वेतपिच्छाचार्यश्री विद्यानन्दजी मुनिराज

आचार्यरत्न श्री देशभूषणजी मुनिराज

यह हर्ष का विषय है कि राजस्थान सरकार ने जयपुर की एक प्रसिद्ध कॉलोनी मालवीय नगर में **'अपभ्रंश साहित्य अकादमी'** (दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा संचालित) को लगभग ३००० वर्गमीटर भूमि रियायती मूल्य पर देकर लोक भाषा प्राकृत-अपभ्रंश के उन्नयन के मार्ग को प्रशस्त किया है।

यहाँ यह लिखना अप्रासंगिक नहीं होगा कि आचार्यश्री की प्रेरणा व आशीर्वाद से अकादमी के लिए भूमि प्राप्त हुई है। इसी तरह उनके आशीर्वाद से शीघ्र ही इसका निर्माण होगा। यह अकादमी देश की प्रथम अकादमी होगी जो राष्ट्रभाषा हिन्दी के लिए आधारभूत रहेगी।

पूज्य आचार्य श्री विद्यानन्दजी मुनिराज से अध्ययन करते हुए उपाध्याय श्री प्रज्ञासागरजी मुनि

जैन ध्वज

आचार्यश्री का कहना है कि ''समाज के रथ को दो ही वर्ग खींचते आये हैं - मुनि और विद्वान।''

''जैनधर्म, संस्कृति, आगमों की रक्षा एवं प्रचार-प्रसार में हमारे मनीषी विद्वानों का अथक परिश्रम एवं पुरुषार्थ दीप-ज्योति की भाँति सदैव हमारा मार्ग प्रकाशित करता रहेगा।''

''धर्म धर्मात्माओं में ही रहता है। यही कारण है कि ज्ञानाराधना अनुरागी आचार्यश्री के हृदय में ज्ञानी विद्वानों के प्रति वात्सल्य बना रहता है।'' वर्तमान में प्रचलित अनेक पुरस्कार आदि अनेक कार्यों से यह बात स्पष्ट है। आचार्यश्री के अनुसार विद्वानों के बिना समाज जीवित नहीं रह सकता है।

आचार्यश्री की जैनविद्या संस्थान से प्रकाशित पुस्तकें :

१. भक्ति सुधा

२. अहिंसा : विश्वधर्म

३. तीर्थंकर महावीर

आचार्यश्री की प्रेरणा से प्रकाशित पुस्तकें :

1. Mahāvīra and his Philosophy of life
2. Bharata and Bhārata
3. Selection from the Jain Law

अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर में पत्राचार के माध्यम से अपभ्रंश के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था २३ वर्ष से चल रही है।

सम्पर्क-सूत्र : 0141-2385247

जस्टिस नगेन्द्रकुमार जैन	पूनमचन्द्र शाह	डॉ. कमलचन्द सोगाणी
अध्यक्ष	संयुक्त मंत्री	निदेशक

25 सितम्बर 2012 सुगन्ध दशमी